"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2026 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

डिजिटल युग और मानवीय संवेदना: समकालीन हिंदी कविता का एक अध्ययन

एम. खाजा बेग, पी. एचडी स्कॉलर, रिसर्च डिपार्टमेंट, हिंदी, विक्रांत यूनिवर्सिटी, ग्वालियर

सारांश

डिजिटल युग ने मानव जीवन, संचार-व्यवहार और सामाजिक संबंधों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है, जिसका प्रभाव समकालीन हिंदी कविता की विषयवस्तु और अभिव्यक्ति पर भी दिखाई देता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल जीवन के संदर्भ में मानवीय संवेदना के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करना है। अध्ययन में चयनित समकालीन हिंदी कविताओं का गुणात्मक एवं पाठ-आधारित विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से डिजिटल संचार, अकेलापन, मानवीय संबंध, सामाजिक दूरी, डिजिटल पहचान तथा भाषा में आए परिवर्तनों को केंद्र में रखा गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डिजिटल तकनीक ने मानवीय संबंधों को सुविधाजनक बनाने के साथ-साथ भावनात्मक दूरी और अकेलेपन जैसी स्थितियों को भी नया संदर्भ प्रदान किया है। समकालीन हिंदी कविता में मोबाइल, स्क्रीन, नेटवर्क, संदेश और सोशल मीडिया जैसे डिजिटल प्रतीक मानवीय अनुभवों और संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के नए माध्यम बन रहे हैं। इस प्रकार डिजिटल युग हिंदी कविता की संवेदना को समाप्त नहीं करता, बल्कि उसके अनुभव, प्रतीक और अभिव्यक्ति के स्वरूप में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाता है।

मुख्य शब्द: समकालीन हिंदी कविता, डिजिटल युग, मानवीय संवेदना, सोशल मीडिया, आभासी संसार

प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी का सामाजिक जीवन तीव्र तकनीकी परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और डिजिटल संचार माध्यमों ने व्यक्ति के दैनिक जीवन, सामाजिक व्यवहार और पारस्परिक संवाद के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। संचार की प्रक्रिया अब केवल प्रत्यक्ष संपर्क अथवा पारंपरिक माध्यमों तक सीमित नहीं रही, बल्कि डिजिटल प्लेटफॉर्मों के माध्यम से निरंतर और तात्कालिक रूप से संचालित हो रही है। डिजिटल तकनीक ने भौगोलिक दूरी को कम करते हुए लोगों को संवाद, सूचना-विनिमय और सामाजिक सहभागिता के नए अवसर प्रदान किए हैं। इस परिवर्तन के परिणामस्वरूप डिजिटल माध्यम अब केवल तकनीकी उपकरण नहीं रह गए हैं, बल्कि समकालीन सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के महत्वपूर्ण घटक बन चुके हैं (Pennington, 2021; Bonsaksen et al., 2023)।

डिजिटल माध्यमों के विस्तार ने मानवीय संबंधों और संवाद की प्रकृति को भी प्रभावित किया है। आज व्यक्ति संदेश, वीडियो कॉल, सोशल नेटवर्किंग साइट्स तथा अन्य डिजिटल माध्यमों के द्वारा निरंतर संपर्क में रह सकता है। इससे दूर स्थित व्यक्तियों के साथ संबंध बनाए रखने की संभावनाएँ बढ़ी हैं, किंतु डिजिटल संपर्क और वास्तविक भावनात्मक निकटता को समान नहीं माना जा सकता। Pennington (2021) के अध्ययन में सोशल मीडिया के विभिन्न प्रकार के उपयोग और अकेलेपन तथा जीवन-संतुष्टि के बीच अलग-अलग संबंध पाए गए। इसी प्रकार Bonsaksen et al. (2023) ने चार देशों के 1,649 वयस्कों के अध्ययन में सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने और अकेलेपन के बीच सकारात्मक संबंध पाया, हालांकि यह संबंध सोशल मीडिया के उपयोग के उद्देश्य के अनुसार भिन्न था। इससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यमों का मानवीय अनुभव पर प्रभाव एकरेखीय नहीं है, बल्कि उपयोग की प्रकृति, उद्देश्य और सामाजिक संदर्भ से प्रभावित होता है।

यह परिवर्तन साहित्य के लिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि साहित्य अपने समय के सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय अनुभवों को संवेदनात्मक तथा रचनात्मक रूप में अभिव्यक्त करता है। जब समाज में संचार के माध्यम, जीवन-शैली और संबंधों की संरचना बदलती है, तो साहित्य की विषय-वस्तु, भाषा, प्रतीक और अभिव्यक्ति के स्वरूप में भी परिवर्तन की संभावनाएँ उत्पन्न होती हैं। डिजिटल तकनीक ने साहित्य के सृजन, संरक्षण, प्रसार और अध्ययन के नए रास्ते खोले हैं। भारतीय साहित्य के संदर्भ में डिजिटल मानविकी पर केंद्रित अध्ययनों ने यह रेखांकित किया है कि डिजिटल तकनीकों का उपयोग भारतीय साहित्यिक और सांस्कृतिक पाठों के संरक्षण, व्याख्या, अभिलेखीकरण तथा नए प्रकार के पाठ-अध्ययन के लिए किया जा रहा है (Zaidi & Pue, 2023)। इस प्रकार साहित्य और डिजिटल तकनीक का संबंध केवल साहित्य के डिजिटल माध्यम पर उपलब्ध होने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह साहित्यिक अध्ययन की पद्धतियों और साहित्यिक संस्कृति के स्वरूप से भी जुड़ता है।

हिंदी साहित्य के संदर्भ में यह परिवर्तन विशेष रूप से समकालीन कविता के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है। कविता अपने समय के जीवनानुभवों को संवेदनात्मक, प्रतीकात्मक और कलात्मक भाषा में अभिव्यक्त करती है। वर्तमान समय में मनुष्य का दैनिक जीवन मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, ऑनलाइन संवाद और आभासी सामाजिकता से गहराई से जुड़ा हुआ है। परिणामतः डिजिटल जीवन से जुड़े अनुभव भी समकालीन साहित्य के संभावित विषयों का हिस्सा बन रहे हैं। भारतीय भाषाओं की कविता के डिजिटल अध्ययन से संबंधित शोधों में डिजिटल तकनीक के माध्यम से काव्य-पाठों के संकलन, संरचनात्मक अध्ययन, व्याख्या और तुलनात्मक विश्लेषण की संभावनाएँ सामने आई हैं (Rizvi et al., 2022)।

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2026 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

इसी प्रकार हिंदी कविता के डिजिटल/कम्प्यूटेशनल अध्ययन ने यह प्रदर्शित किया है कि डिजिटल उपकरण साहित्यिक पाठों की समानता और संरचनात्मक विशेषताओं के अध्ययन में उपयोगी हो सकते हैं (Prakash et al., 2022)। ये प्रयास साहित्य और तकनीक के बीच विकसित हो रहे नए अकादमिक संबंध की ओर संकेत करते हैं।

समकालीन हिंदी कविता में डिजिटल जीवन को केवल तकनीकी उपलब्धि के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। इसके भीतर निहित मानवीय अनुभव अधिक महत्वपूर्ण हैं। डिजिटल तकनीक ने व्यक्ति को अभिव्यक्ति और संवाद के अनेक नए अवसर दिए हैं, लेकिन इसके साथ सामाजिक संबंधों और भावनात्मक अनुभवों में उत्पन्न जटिलताओं को भी समझना आवश्यक है। व्यक्ति अनेक लोगों से डिजिटल रूप से जुड़ा रह सकता है, फिर भी उसके अनुभव में अकेलापन या भावनात्मक दूरी उपस्थित हो सकती है। इसी प्रकार सोशल मीडिया व्यक्ति को अपनी पहचान, विचार और अनुभवों को सार्वजनिक करने का अवसर देता है, किंतु डिजिटल उपस्थिति और वास्तविक सामाजिक अनुभव के बीच अंतर भी उत्पन्न हो सकता है। इस विरोधाभास को सामाजिक वैज्ञानिक अध्ययनों में भी देखा गया है। Pennington (2021) ने पाया कि सोशल मीडिया का कुछ प्रकार का उपयोग सकारात्मक सामाजिक संपर्क से जुड़ा हो सकता है, जबकि अन्य प्रकार का उपयोग अकेलेपन और कम जीवन-संतुष्टि से संबंधित हो सकता है। Bonsaksen et al. (2023) ने भी यह संकेत दिया कि सोशल मीडिया पर समय बिताने और अकेलेपन के बीच संबंध उपयोग के उद्देश्यों के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। इस प्रकार डिजिटल जीवन को केवल सुविधा या संकट के किसी एक पक्ष से देखना पर्याप्त नहीं होगा।

इसी बिंदु पर मानवीय संवेदना का प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है। संवेदना व्यक्ति के निजी भाव-जगत तक सीमित न होकर उसके सामाजिक संबंधों, आत्मीयता, दूसरे के अनुभव के प्रति प्रतिक्रिया और अपने परिवेश के साथ भावनात्मक जुड़ाव से भी संबंधित है। डिजिटल माध्यमों ने संवेदना की अभिव्यक्ति के नए रास्ते उपलब्ध कराए हैं। किसी सामाजिक घटना पर तत्काल प्रतिक्रिया व्यक्त करना, व्यक्तिगत अनुभव को व्यापक समुदाय तक पहुँचाना तथा दूर स्थित व्यक्ति के साथ संवाद स्थापित करना डिजिटल संचार की प्रमुख विशेषताएँ हैं। दूसरी ओर, डिजिटल संपर्क की निरंतरता वास्तविक आत्मीयता की अनिवार्य गारंटी नहीं है। सामाजिक मीडिया के उपयोग और अकेलेपन के संबंध पर हुए शोध इसी जटिलता की ओर संकेत करते हैं (Pennington, 2021; Bonsaksen et al., 2023)। साहित्य के लिए यह स्थिति इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कविता बाहरी सामाजिक परिवर्तन के साथ-साथ उन परिवर्तनों से उत्पन्न आंतरिक अनुभवों को भी अभिव्यक्त करती है।

डिजिटल जीवन के प्रभाव को कविता की भाषा और अभिव्यक्ति के स्तर पर भी समझा जा सकता है। डिजिटल संस्कृति ने दैनिक संचार में तकनीकी शब्दावली, नए प्रतीकों और संक्षिप्त अभिव्यक्ति-रूपों को व्यापक बनाया है। साहित्यिक पाठों के डिजिटल अध्ययन ने यह संभावना विकसित की है कि तकनीक का उपयोग केवल साहित्य को संग्रहित करने या पाठकों तक पहुँचाने के लिए ही नहीं, बल्कि साहित्यिक पाठ की संरचना, भाषा और काव्यात्मक विशेषताओं के विश्लेषण के लिए भी किया जा सकता है (Rizvi et al., 2022; Prakash et al., 2022)। भारतीय साहित्य और डिजिटल मानविकी पर केंद्रित कार्यों में भी डिजिटल माध्यमों के कारण साहित्यिक पाठों और उनके अध्ययन के बदलते स्वरूप पर ध्यान दिया गया है (Zaidi & Pue, 2023)। इसलिए समकालीन हिंदी कविता में डिजिटल जीवन की उपस्थिति का अध्ययन करते समय केवल विषय-वस्तु ही नहीं, बल्कि भाषा, प्रतीक, बिंब और अभिव्यक्ति की संरचना को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

उपलब्ध शोध-साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल मीडिया के सामाजिक और भावनात्मक प्रभावों पर पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध हैं, विशेषकर सोशल मीडिया, सामाजिक संपर्क और अकेलेपन के संबंध में (Pennington, 2021; Bonsaksen et al., 2023)। दूसरी ओर, भारतीय साहित्य और डिजिटल मानविकी के क्षेत्र में भी डिजिटल तकनीक, साहित्यिक पाठ और नई अध्ययन-पद्धतियों के अंतर्संबंधों पर महत्वपूर्ण कार्य सामने आए हैं (Zaidi & Pue, 2023; Rizvi et al., 2022)। तथापि, इन दोनों क्षेत्रों के बीच स्थित उस विशिष्ट साहित्यिक प्रश्न पर अभी पर्याप्त व्यवस्थित अध्ययन की संभावना बनी हुई है जिसमें समकालीन हिंदी कविता में डिजिटल जीवन और उसके संदर्भ में बदलती मानवीय संवेदना को एक साथ केंद्र में रखा जाए। विशेष रूप से डिजिटल संबंधों, आभासी निकटता, अकेलेपन, पहचान, सामाजिक दूरी और तकनीकी भाषा को हिंदी कविता के पाठ-विश्लेषण के माध्यम से समझना इस क्षेत्र में एक उपयोगी शोध-दिशा हो सकती है।

शोध-पद्धति एवं अध्ययन का आधार

प्रस्तुत अध्ययन का स्वरूप मूलतः गुणात्मक (Qualitative) है तथा इसमें पाठ-विश्लेषण (Textual Analysis) को प्रमुख शोध-पद्धति के रूप में अपनाया गया है। अध्ययन का उद्देश्य डिजिटल तकनीक के प्रभाव को मात्रात्मक रूप से मापना नहीं, बल्कि समकालीन हिंदी कविता में डिजिटल जीवन से संबंधित अनुभवों, प्रतीकों, भाषा और मानवीय संवेदना की साहित्यिक अभिव्यक्ति को समझना है। इसलिए चयनित

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2026 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

काव्य-पाठों को उनके सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में पढ़ते हुए उनमें उपस्थित अर्थ, अंतर्विरोध और संवेदनात्मक संकेतों की व्याख्या की गई है। गुणात्मक साहित्यिक अध्ययन में पाठ को उसके ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ से जोड़कर देखना आवश्यक माना जाता है, क्योंकि साहित्यिक अर्थ केवल पाठ के शब्दों में ही नहीं, बल्कि उसके संदर्भ और पाठकीय व्याख्या में भी निर्मित होता है। डिजिटल मानविकी के विकास ने साहित्यिक पाठों के अध्ययन के लिए पारंपरिक close reading के साथ नई विश्लेषणात्मक संभावनाएँ भी विकसित की हैं (Zaidi & Pue, 2023)।

अध्ययन के लिए समकालीन हिंदी कविता के चयनित काव्य-पाठों का उद्देश्यपूर्ण चयन (Purposive Selection) किया गया है। चयन का आधार केवल यह नहीं रहा कि कोई कविता डिजिटल माध्यम पर प्रकाशित है, बल्कि यह देखा गया है कि उसमें डिजिटल युग के जीवन-अनुभवों का साहित्यिक रूपांतरण किस सीमा तक उपस्थित है। ऐसे काव्य-पाठों को प्राथमिकता दी गई है जिनमें तकनीक, इंटरनेट, सोशल मीडिया, आभासी संवाद, डिजिटल पहचान, बदलते मानवीय संबंध, अकेलापन, सामाजिक दूरी या आधुनिक जीवन की तकनीकी संरचना प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में अभिव्यक्त होती है। इस प्रकार चयनित कविताएँ अध्ययन के केंद्रीय प्रश्न—डिजिटल जीवन और मानवीय संवेदना के संबंध—से सीधे जुड़ी हुई हैं।

अध्ययन का प्राथमिक corpus समकालीन हिंदी कविता के उन पाठों पर आधारित है जो डिजिटल जीवन और उससे संबंधित सामाजिक-संवेदनात्मक अनुभवों को अभिव्यक्त करते हैं। इसमें प्रकाशित काव्य-संग्रहों के साथ साहित्यिक पत्रिकाओं और विश्वसनीय डिजिटल साहित्यिक मंचों पर उपलब्ध चयनित कविताओं को शामिल किया गया है। डिजिटल माध्यमों पर कविता के विस्तार ने रचनाकार और पाठक के बीच संवाद को अधिक प्रत्यक्ष बनाया है तथा कविता के प्रसार के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। डिजिटल मंचों पर साहित्य की उपलब्धता ने यह भी संभव बनाया है कि कविता को उसके पारंपरिक प्रकाशन-संदर्भ के साथ-साथ उसके डिजिटल संचार-संदर्भ में भी पढ़ा जाए (Zaidi & Pue, 2023)। हालांकि, डिजिटल मंच पर उपलब्ध प्रत्येक कविता को स्वतः 'डिजिटल कविता' नहीं माना गया है; केवल ऑनलाइन उपलब्धता को चयन का पर्याप्त आधार नहीं बनाया गया है।

काव्य-पाठों के चयन में मुख्यतः चार आधार अपनाए गए हैं—समकालीनता, विषयगत प्रासंगिकता, डिजिटल संदर्भ और साहित्यिक विश्लेषण की संभाव्यता। समकालीनता के अंतर्गत वर्तमान सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से संबंधित अपेक्षाकृत नवीन काव्य-पाठों को प्राथमिकता दी गई है। विषयगत प्रासंगिकता के अंतर्गत उन रचनाओं का चयन किया गया है जिनमें डिजिटल तकनीक और उससे निर्मित जीवन-स्थितियों का संबंध मानवीय अनुभव से स्थापित होता है। डिजिटल संदर्भ के अंतर्गत सोशल मीडिया, इंटरनेट, मोबाइल संचार, आभासी संसार, डिजिटल पहचान अथवा तकनीकी जीवन-शैली से संबंधित अनुभवों को ध्यान में रखा गया है। साहित्यिक विश्लेषण की संभाव्यता का अर्थ यह है कि चयनित कविता में तकनीकी संदर्भ केवल सूचना के रूप में उपस्थित न होकर किसी सामाजिक, भावनात्मक अथवा मानवीय अनुभव को व्यक्त करने का माध्यम भी बनता हो।

अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में चयनित कविताएँ, काव्य-संग्रह, साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएँ तथा प्रमाणित डिजिटल साहित्यिक मंचों पर उपलब्ध मूल काव्य-पाठ सम्मिलित हैं। द्वितीयक स्रोतों में समकालीन हिंदी कविता से संबंधित आलोचनात्मक ग्रंथ, शोध-पत्र, शोध-लेख, साहित्यिक अध्ययन तथा डिजिटल साहित्य और डिजिटल मानविकी से संबंधित अकादमिक सामग्री का उपयोग किया गया है। भारतीय साहित्य और डिजिटल मानविकी पर उपलब्ध अध्ययनों ने यह स्पष्ट किया है कि डिजिटल माध्यम साहित्यिक पाठों के संरक्षण और प्रसार के साथ-साथ उनके अध्ययन और विश्लेषण के लिए भी नए अवसर प्रदान करते हैं (Zaidi & Pue, 2023)। इसी प्रकार हिंदी साहित्य के डिजिटल अध्ययन में computational methods के प्रयोग से साहित्यिक पाठों की संरचनात्मक विशेषताओं और पारस्परिक संबंधों को समझने की संभावनाएँ सामने आई हैं (Prakash et al., 2022)।

चयनित काव्य-पाठों का विश्लेषण विषयगत (Thematic) और व्याख्यात्मक (Interpretive) दृष्टिकोण से किया गया है। विश्लेषण के लिए डिजिटल जीवन, मानवीय संबंध, अकेलापन एवं भावनात्मक दूरी, डिजिटल पहचान, संवाद, सामाजिक दूरी तथा भाषा और अभिव्यक्ति जैसे प्रमुख आयाम निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक कविता में यह देखा गया है कि डिजिटल तकनीक किस रूप में उपस्थित होती है और उसका संबंध कवि द्वारा प्रस्तुत मानवीय अनुभव से किस प्रकार स्थापित होता है। इसके साथ ही कविता में प्रयुक्त प्रतीकों, बिंबों, शब्दावली और कथ्य का विश्लेषण किया गया है, ताकि तकनीकी संदर्भ के पीछे छिपे सामाजिक और संवेदनात्मक अर्थों को समझा जा सके।

इस अध्ययन में close reading को विशेष महत्व दिया गया है। चयनित कविताओं को केवल विषय की उपस्थिति के आधार पर वर्गीकृत करने के बजाय उनके संदर्भ, भाषा, प्रतीक और भाव-संरचना का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। उदाहरणतः यदि किसी कविता में मोबाइल, स्क्रीन, संदेश या

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2026 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

सोशल मीडिया का उल्लेख मिलता है, तो अध्ययन का उद्देश्य केवल उस तकनीकी वस्तु की पहचान करना नहीं है, बल्कि यह समझना है कि वह वस्तु कविता में किस मानवीय अनुभव का प्रतीक बनती है। इसी प्रकार आभासी संवाद को केवल संचार के माध्यम के रूप में न देखकर यह देखा गया है कि वह आत्मीयता, दूरी, स्मृति, अकेलेपन या पहचान के प्रश्न से किस प्रकार जुड़ता है।

डिजिटल युग और समकालीन हिंदी कविता

डिजिटल युग ने मनुष्य के जीवन को केवल तकनीकी स्तर पर परिवर्तित नहीं किया है, बल्कि उसके सामाजिक व्यवहार, समय-बोध, संचार-पद्धति और अनुभव-संसार को भी प्रभावित किया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के विस्तार ने सूचना तथा संचार को अधिक त्वरित और व्यापक बनाया है। साहित्य भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं रहा। जो साहित्य पहले मुख्यतः पुस्तक, पत्रिका और साहित्यिक गोष्ठियों जैसे पारंपरिक माध्यमों से पाठकों तक पहुँचता था, वह अब वेबसाइट, ई-पत्रिका, ब्लॉग, सोशल मीडिया, डिजिटल पुस्तकालय और अन्य ऑनलाइन मंचों के माध्यम से तत्काल व्यापक पाठक समुदाय तक पहुँच सकता है। भारतीय साहित्य के संदर्भ में डिजिटल मानविकी और इलेक्ट्रॉनिक साहित्य पर हाल के अध्ययनों से भी स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यम साहित्य के उत्पादन, प्रसार, पाठकीय सहभागिता और अध्ययन की पद्धतियों को नए रूप प्रदान कर रहे हैं (Shahid et al., 2026)। इस परिवर्तन ने साहित्य और पाठक के बीच की पारंपरिक दूरी को कम किया है और साहित्यिक संस्कृति में नए प्रकार की सहभागिता को संभव बनाया है।

हिंदी साहित्य के लिए डिजिटल माध्यम का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है क्योंकि इससे साहित्य की पहुँच भौगोलिक और संस्थागत सीमाओं से आगे बढ़ी है। डिजिटल मंचों ने ऐसे लेखकों और कवियों को भी अभिव्यक्ति का अवसर दिया है जिन्हें पारंपरिक प्रकाशन संस्थानों तक पहुँच बनाने में कठिनाई हो सकती थी। सोशल मीडिया, ब्लॉग और डिजिटल साहित्यिक मंचों ने रचनाकार को सीधे पाठक से जोड़ने की संभावना विकसित की है। इस परिवर्तन को साहित्यिक लोकतंत्रीकरण के एक रूप के रूप में देखा जा सकता है, यद्यपि इसके साथ गुणवत्ता, संपादन, साहित्यिक मूल्यांकन और विश्वसनीयता से संबंधित प्रश्न भी उत्पन्न होते हैं। हिंदी साहित्य के डिजिटल युग पर हाल के अध्ययनों में भी यह रेखांकित किया गया है कि डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने साहित्य की पहुँच और पाठकीय आधार को विस्तृत किया है, लेकिन साथ ही लोकप्रियता और साहित्यिक गुणवत्ता के बीच संतुलन, संपादन की कमी तथा भाषा-संबंधी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं (Patki, 2026)। अतः डिजिटल साहित्यिक संस्कृति को केवल अवसर के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है; उसके साथ जुड़ी नई जटिलताओं को भी समझना आवश्यक है।

समकालीन हिंदी कविता के संदर्भ में डिजिटल परिवर्तन का प्रभाव और अधिक स्पष्ट दिखाई देता है। कविता की पारंपरिक पाठकीय प्रक्रिया में पाठक प्रायः पुस्तक या पत्रिका के माध्यम से कविता तक पहुँचता था, जबकि डिजिटल वातावरण में कविता का पाठ कई माध्यमों से संभव हो गया है। लिखित कविता के साथ ऑडियो कविता, वीडियो कविता, spoken-word performance और दृश्यात्मक कविता के रूप भी विकसित हुए हैं। इस परिवर्तन ने कविता को केवल पढ़े जाने वाले पाठ से आगे बढ़ाकर एक बहुआयामी अनुभव में परिवर्तित किया है, जिसमें शब्द के साथ दृश्य, ध्वनि और प्रदर्शन भी जुड़ सकते हैं। सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों पर कविता के नए रूपों के संबंध में किए गए अध्ययनों में यह पाया गया है कि डिजिटल माध्यम कविता के निर्माण और ग्रहण को अधिक सहभागी तथा बहु-माध्यमीय बना सकते हैं (Kovalik & Curwood, 2019)। हालिया भारतीय संदर्भ में भी सोशल मीडिया आधारित लघु-कविता के अध्ययन में यह संकेत मिलता है कि डिजिटल मंचों ने कविता के आकार, प्रस्तुति, लय, दृश्यात्मकता और संप्रेषण के तरीकों को प्रभावित किया है (Shiva, 2026)।

तकनीक और बदलती जीवन-शैली के बीच संबंध भी इस परिवर्तन का महत्वपूर्ण आधार है। डिजिटल उपकरण अब मनुष्य के जीवन में अलग से उपस्थित तकनीकी वस्तुएँ नहीं रह गए हैं, बल्कि दैनिक जीवन की सामान्य गतिविधियों का हिस्सा बन चुके हैं। मोबाइल फोन के माध्यम से व्यक्ति एक ही समय में संचार, मनोरंजन, समाचार, अध्ययन और सामाजिक सहभागिता जैसी अनेक गतिविधियों में शामिल हो सकता है। इस निरंतर संपर्क ने समय और स्थान की पारंपरिक अवधारणाओं को भी प्रभावित किया है। व्यक्ति भौतिक रूप से किसी स्थान पर उपस्थित होते हुए भी डिजिटल रूप से अनेक अन्य स्थानों और सामाजिक समूहों से जुड़ा रह सकता है। यह द्विस्तरीय उपस्थिति आधुनिक मनुष्य के अनुभव को जटिल बनाती है और साहित्य के लिए नए अनुभव-संदर्भ निर्मित करती है। डिजिटल संस्कृति पर हाल के अध्ययनों में साहित्य और भाषा के स्तर पर भी इसी प्रकार के परिवर्तन की ओर संकेत किया गया है, जहाँ सोशल मीडिया और डिजिटल प्रकाशन ने लेखन, पाठकीय व्यवहार और साहित्यिक अभिव्यक्ति के स्वरूप को प्रभावित किया है (Singh, 2025)।

डिजिटल जीवन का प्रभाव केवल जीवन-शैली तक सीमित नहीं है; यह व्यक्ति के संबंधों और सामाजिक अनुभव को भी प्रभावित करता है। सोशल मीडिया ने व्यक्ति को निरंतर सामाजिक संपर्क में रहने की सुविधा प्रदान की है। मित्रों, परिवार और परिचितों से संपर्क बनाए रखना अपेक्षाकृत

सरल हुआ है। लेकिन इस डिजिटल निकटता के भीतर वास्तविक सामाजिक दूरी की संभावना भी मौजूद रहती है। व्यक्ति अनेक लोगों के डिजिटल नेटवर्क का हिस्सा होते हुए भी व्यक्तिगत स्तर पर अकेलेपन का अनुभव कर सकता है। यही विरोधाभास समकालीन साहित्य के लिए महत्वपूर्ण बनता है। साहित्य के लिए प्रश्न यह नहीं है कि तकनीक अच्छी है या बुरी, बल्कि यह है कि तकनीक के साथ जीने वाला मनुष्य अपने संबंधों और भावनात्मक अनुभवों को किस प्रकार महसूस करता है। इस संदर्भ में सोशल मीडिया आधारित साहित्यिक समुदायों पर किए गए अध्ययनों ने यह दिखाया है कि डिजिटल मंच रचनाकार और पाठक के बीच नए प्रकार के संबंध तथा सहभागिता विकसित कर सकते हैं (Raychaudhuri, 2019)। इस प्रकार डिजिटल संसार एक ओर समुदाय का निर्माण करता है और दूसरी ओर व्यक्तिगत अनुभव में दूरी तथा अलगाव की संभावनाएँ भी उत्पन्न कर सकता है।

सोशल मीडिया ने साहित्य के उत्पादन और प्रसार की प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण बदलाव किया है। पारंपरिक साहित्यिक व्यवस्था में लेखक, प्रकाशक, संपादक और पाठक के बीच अपेक्षाकृत स्पष्ट संरचना दिखाई देती थी। डिजिटल माध्यमों ने इस संरचना को अधिक खुला और गतिशील बनाया है। अब रचनाकार अपने लेखन को सीधे पाठकों तक पहुँचा सकता है और पाठक तत्काल प्रतिक्रिया, टिप्पणी या साझा करने के माध्यम से साहित्यिक प्रक्रिया में भाग ले सकता है। इस प्रकार पाठक केवल साहित्य का उपभोक्ता नहीं रह जाता, बल्कि वह उसकी लोकप्रियता और प्रसार की प्रक्रिया में भी सक्रिय भूमिका निभा सकता है। डिजिटल साहित्यिक संस्कृति पर शोध इस परिवर्तन को लेखकीयता और पाठकीयता की बदलती अवधारणाओं से जोड़कर देखता है (Shahid et al., 2026)। हिंदी साहित्य में भी वेब-पत्रिकाओं, ब्लॉगों और सोशल मीडिया मंचों ने साहित्यिक अभिव्यक्ति के नए क्षेत्र बनाए हैं (Meena, 2026)।

इस परिवर्तन के साथ कविता के विषय-संसार में भी विस्तार दिखाई देता है। पारंपरिक काव्य-विषयों के साथ डिजिटल जीवन से संबंधित अनुभव नए साहित्यिक विषयों के रूप में उभर रहे हैं। मोबाइल स्क्रीन, ऑनलाइन संवाद, संदेश, सोशल मीडिया प्रोफाइल, आभासी पहचान, डिजिटल स्मृतियाँ, ऑनलाइन संबंध, सूचना की अधिकता और निरंतर कनेक्टिविटी जैसे अनुभव आधुनिक मनुष्य के जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। इनके कारण कविता में व्यक्ति और तकनीक के संबंध, वास्तविक और आभासी संसार के बीच तनाव, तथा आधुनिक जीवन में अकेलेपन और आत्मीयता के प्रश्नों को नए रूप में देखने की संभावना पैदा हुई है। डिजिटल युग की हिंदी कविता पर हाल के अध्ययन में विशेष रूप से 'लघु-कविता' के विकास को सोशल मीडिया की गति, दृश्यात्मकता और सीमित ध्यान-अवधि से जोड़ा गया है (Shiva, 2026)। इस प्रकार डिजिटल मंच केवल कविता को प्रकाशित करने का नया माध्यम नहीं है, बल्कि वह कविता की विषय-वस्तु और प्रस्तुति की संरचना को भी प्रभावित कर सकता है।

डिजिटल संस्कृति ने कविता की भाषा और शिल्प को भी प्रभावित किया है। डिजिटल संचार की भाषा अपेक्षाकृत संक्षिप्त, त्वरित और मिश्रित होती है। हिंदी के साथ अंग्रेजी तथा तकनीकी शब्दों का प्रयोग डिजिटल संवाद में सामान्य हो गया है। इसका प्रभाव साहित्यिक अभिव्यक्ति में भी देखा जा सकता है। समकालीन डिजिटल कविता में तकनीकी शब्दावली, सोशल मीडिया से जुड़े संकेत और नए प्रतीक पारंपरिक काव्य-भाषा के साथ दिखाई दे सकते हैं। इसके साथ दृश्यात्मकता भी महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि डिजिटल मंच पर कविता केवल शब्दों के रूप में नहीं, बल्कि चित्र, टाइपोग्राफी, वीडियो और ध्वनि के साथ भी प्रस्तुत की जा सकती है। Digital poetry और social-media literature पर किए गए अध्ययनों में multimodality को डिजिटल साहित्यिक अभिव्यक्ति की महत्वपूर्ण विशेषता माना गया है (Kovalik & Curwood, 2019; Paul, 2026)। हिंदी कविता के संदर्भ में यह परिवर्तन विशेष अध्ययन की माँग करता है, क्योंकि यहाँ भाषा की पारंपरिक संरचना और डिजिटल संचार की नई शैली के बीच एक नया संवाद निर्मित होता है।

डिजिटल संसार ने कविता के पाठक-वर्ग को भी प्रभावित किया है। पारंपरिक साहित्य में पाठक प्रायः साहित्यिक पत्रिकाओं, पुस्तकों और पुस्तकालयों के माध्यम से कविता तक पहुँचता था, जबकि डिजिटल मंचों पर कविता मोबाइल स्क्रीन के माध्यम से पाठक के दैनिक जीवन का हिस्सा बन सकती है। इससे साहित्य का पाठकीय आधार विस्तृत होने की संभावना बढ़ती है, विशेषकर युवा पाठकों के संदर्भ में। दूसरी ओर, डिजिटल वातावरण में साहित्यिक सामग्री की अधिकता के कारण पाठक का ध्यान सीमित समय में अनेक प्रकार की सामग्री के बीच विभाजित रहता है। परिणामतः कविता के छोटे, त्वरित और दृश्यात्मक रूप अधिक आसानी से ग्रहण किए जा सकते हैं। हिंदी साहित्य और युवा पीढ़ी पर हालिया शोध में तकनीक के कारण साहित्य के पठन, लेखन, प्रस्तुति और उपभोग के बदलते रूपों की ओर संकेत किया गया है (Munirsab, 2026)। इस परिवर्तन का प्रभाव कविता की संरचना और उसके संप्रेषण दोनों पर पड़ता है।

फिर भी डिजिटल युग में कविता का विकास केवल माध्यम का परिवर्तन नहीं है। इसके भीतर एक व्यापक सांस्कृतिक और मानवीय परिवर्तन भी निहित है। डिजिटल संसार ने मनुष्य के अनुभव को अधिक त्वरित, दृश्यात्मक और नेटवर्क-

आधारित बनाया है। ऐसे में कविता के सामने चुनौती यह है कि वह इस बदलते अनुभव को किस प्रकार संवेदनात्मक गहराई प्रदान करे। सोशल मीडिया की तात्कालिकता के बीच कविता क्या केवल तत्काल प्रतिक्रिया बनकर रह जाती है, या वह समय, स्मृति, संबंध और अस्तित्व के गहरे प्रश्नों को भी व्यक्त कर सकती है—यह समकालीन हिंदी कविता के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न है। इसी प्रकार डिजिटल मंचों की लोकप्रियता और साहित्यिक गुणवत्ता के बीच संतुलन का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। हाल के अध्ययनों में डिजिटल हिंदी साहित्य के सामने गुणवत्ता, संपादन, भाषा, साहित्यिक आलोचना और कॉपीराइट जैसी चुनौतियों को रेखांकित किया गया है (Patki, 2026)।

डिजिटल जीवन के संदर्भ में मानवीय संवेदना

डिजिटल जीवन ने मनुष्य के अनुभव-जगत को जिस प्रकार प्रभावित किया है, उसका सबसे महत्वपूर्ण पक्ष मानवीय संवेदना में दिखाई देता है। तकनीक ने संचार को त्वरित बनाया है, दूरियों को कम किया है और व्यक्ति को निरंतर संपर्क में रहने की सुविधा प्रदान की है; किंतु इसी निरंतर संपर्क के भीतर भावनात्मक दूरी, अकेलापन, स्मृति और आत्मीयता के नए प्रश्न भी उत्पन्न हुए हैं। समकालीन हिंदी कविता इन विरोधाभासी अनुभवों को केवल तकनीकी वस्तुओं के उल्लेख के माध्यम से नहीं, बल्कि मनुष्य और तकनीक के बीच बदलते संबंधों के रूप में अभिव्यक्त करती है। इस संदर्भ में डिजिटल जीवन को समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि कविता में मोबाइल, फोन, स्क्रीन, संदेश, नेटवर्क और डिजिटल संवाद किस प्रकार मानवीय संबंधों तथा भावनात्मक अनुभवों के प्रतीक में रूपांतरित होते हैं।

समकालीन हिंदी कविता में इस परिवर्तन का एक उल्लेखनीय उदाहरण उदय प्रकाश की कविता "मेरा मोबाइल नम्बर डिलीट कर दें प्लीज़" है। यह कविता उनके काव्य-संग्रह *अम्बर में अबाबील* (2019) में सम्मिलित है और इसकी केंद्रीय संरचना मोबाइल नंबर तथा फोन के माध्यम से स्थापित होने वाले संबंध के इर्द-गिर्द निर्मित होती है। कविता की आरंभिक पंक्तियों में कवि आवाज और ब्रह्मांड के संबंध को स्थापित करते हुए लिखते हैं—"सबसे पहले सिर्फ़ आवाज़ थी / कोई नाद था"। इसके बाद फोन करने की क्रिया को एक गहरे अस्तित्वगत अनुभव से जोड़ा जाता है और अंततः मोबाइल नंबर मिटा देने की इच्छा सामने आती है (Prakash, 2019)। यहाँ "मोबाइल नम्बर" केवल संपर्क का साधन नहीं रह जाता, बल्कि संबंध की स्मृति और उसकी उपस्थिति का प्रतीक बन जाता है। किसी व्यक्ति का नंबर मोबाइल से हटाना तकनीकी रूप से एक साधारण क्रिया है, किंतु कविता उसे भावनात्मक अर्थ प्रदान करती है। नंबर को मिटाने की इच्छा वस्तुतः उस संबंध से स्वयं को अलग करने की इच्छा है जो फोन की स्मृति में सुरक्षित है। इस प्रकार डिजिटल उपकरण आधुनिक मनुष्य की स्मृति का बाहरी विस्तार बन जाता है। पारंपरिक स्मृति जहाँ मनुष्य के मन, वस्तुओं, पत्रों अथवा भौतिक स्थानों से जुड़ी होती थी, वहीं डिजिटल युग में संपर्क-सूची, संदेश, तस्वीरें और कॉल-इतिहास भी स्मृति के वाहक बन जाते हैं। कविता इस डिजिटल स्मृति के भीतर छिपी भावनात्मक जटिलता को सामने लाती है।

कविता का एक महत्वपूर्ण पक्ष संवाद और मौन का द्वंद्व है। फोन मूलतः आवाज को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने वाला माध्यम है, लेकिन उदय प्रकाश की कविता में यही फोन एक ऐसे मौन की ओर ले जाता है जो केवल संवाद की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि अस्तित्वगत अकेलेपन का संकेत बन जाता है। कविता में फोन करने की क्रिया को "सननाटे के महासागर" में डूबे किसी प्राचीन जहाज को पुकारने से जोड़ा गया है (Prakash, 2019)। इस बिंब में डिजिटल संचार की विडंबना स्पष्ट होती है—व्यक्ति फोन के माध्यम से किसी दूसरे तक पहुँचने का प्रयास करता है, लेकिन उसके सामने जो अनुभव आता है वह मौन और अनुपस्थिति का है। इस प्रकार तकनीकी संपर्क और भावनात्मक संपर्क के बीच का अंतर कविता का महत्वपूर्ण अर्थ-क्षेत्र बन जाता है।

यहाँ डिजिटल तकनीक मानवीय संबंधों को समाप्त करने वाली शक्ति के रूप में नहीं आती, बल्कि वह संबंधों की जटिलता को अधिक स्पष्ट करने वाला माध्यम बनती है। फोन किसी व्यक्ति को दूर स्थित दूसरे व्यक्ति तक पहुँचा सकता है, लेकिन वह अनुपस्थिति को उपस्थिति में पूरी तरह परिवर्तित नहीं कर सकता। किसी की आवाज सुन लेना उस व्यक्ति के साथ वास्तव में होने के समान नहीं है। इसी अंतर में आधुनिक मनुष्य की संवेदनात्मक स्थिति दिखाई देती है। इस दृष्टि से कविता डिजिटल संचार की सुविधा के भीतर छिपी भावनात्मक असुरक्षा को व्यक्त करती है।

डिजिटल जीवन और मानवीय संवेदना के संबंध का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष अकेलापन है। डिजिटल संसार में व्यक्ति अनेक संपर्कों से जुड़ा हुआ दिखाई दे सकता है, लेकिन संपर्कों की संख्या और आत्मीय संबंधों की गहराई एक ही बात नहीं है। सोशल मीडिया और डिजिटल संचार पर हुए सामाजिक वैज्ञानिक अध्ययनों में भी यह संकेत मिलता है कि डिजिटल संपर्क का भावनात्मक प्रभाव उपयोग की प्रकृति और उद्देश्य के अनुसार बदलता है (Pennington, 2021; Bonsaksen et al., 2023)। समकालीन कविता इसी विरोधाभास को साहित्यिक स्तर पर अनुभव में बदलती है। डिजिटल युग का अकेलापन इसलिए पारंपरिक अकेलेपन से कुछ अलग दिखाई देता है—यह आवश्यक नहीं कि व्यक्ति के आसपास कोई न हो; वह अनेक डिजिटल संपर्कों के बीच

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2026 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

भी अकेला हो सकता है।

इसी अनुभव को सुशील कुमार पाण्डेय की कविता "डिजिटल युग का मौन" में अधिक प्रत्यक्ष रूप में देखा जा सकता है। कविता की शुरुआत ही डिजिटल उत्तेजना और मानसिक स्थिति के संबंध से होती है—"नोटिफिकेशन की बारिश में डूबा है मन" और "हर क्षण स्क्रीन चमकती है"। यहाँ "नोटिफिकेशन" आधुनिक जीवन की निरंतर सूचना-उपस्थिति का प्रतीक है। व्यक्ति के पास सूचना का अभाव नहीं है; समस्या यह है कि सूचना की निरंतरता उसके भीतर शांति के लिए स्थान कम कर देती है। "स्क्रीन" भी केवल तकनीकी वस्तु नहीं है, बल्कि वह आधुनिक मनुष्य और बाहरी संसार के बीच मध्यस्थता करने वाली सतह बन जाती है।

पाण्डेय की कविता में "स्क्रॉल", "लाइक्स", "फॉरवर्ड्स", "टैब्स", "स्टेटस", "ट्वीट", "मीम", "वीडियो" और "ऐप्स" जैसे शब्दों का प्रयोग उल्लेखनीय है। ये शब्द कविता की भाषा में डिजिटल संस्कृति की सीधी उपस्थिति दर्ज करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि समकालीन तकनीकी अनुभव ने केवल कविता के विषयों को ही प्रभावित नहीं किया है, बल्कि उसकी शब्दावली और प्रतीक-संसार को भी बदलने की क्षमता रखता है। पारंपरिक काव्य-भाषा में प्रकृति, ऋतु, नदी, आकाश, स्मृति और प्रेम जैसे प्रतीकों के साथ अब स्क्रीन, नेटवर्क, नोटिफिकेशन और डिजिटल एप्लिकेशन जैसे नए सांस्कृतिक प्रतीक भी अनुभव की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकते हैं।

पाण्डेय की कविता में डिजिटल जीवन का एक और महत्वपूर्ण पक्ष ध्यान और स्मृति का विखंडन है। कविता में विचारों की तुलना ब्राउज़र में खुले हुए अनेक टैब से की गई है और एक टैब बंद करने के बाद दूसरे के सामने आ जाने का बिंब प्रस्तुत किया गया है। यह बिंब आधुनिक मनुष्य की मानसिक स्थिति को तकनीकी अनुभव के माध्यम से व्यक्त करता है। यहाँ ब्राउज़र केवल इंटरनेट का उपकरण नहीं रह जाता; वह मन की संरचना का रूपक बन जाता है। मनुष्य के भीतर एक विचार समाप्त होने से पहले ही दूसरा विचार, सूचना या उत्तेजना उपस्थित हो जाती है। इस प्रकार डिजिटल संस्कृति की त्वरितता व्यक्ति के आंतरिक अनुभव में भी प्रवेश करती दिखाई देती है।

इसी कविता में "इतिहास मिटाओ, / पर स्मृति की कैश साफ कहाँ होती है" जैसी पंक्तियाँ डिजिटल स्मृति और मानवीय स्मृति के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित करती हैं। तकनीकी संसार में डेटा को delete किया जा सकता है, लेकिन मनुष्य की स्मृति को उसी प्रकार मिटा पाना संभव नहीं है। यहाँ "कैश" तकनीकी शब्द होने के बावजूद मानवीय स्मृति का रूपक बन जाता है। यह आधुनिक कविता की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि वह तकनीकी शब्दों को केवल उनकी तकनीकी अर्थवत्ता में नहीं रखती, बल्कि उन्हें मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक अर्थ प्रदान करती है।

डिजिटल जीवन का प्रभाव व्यक्तिगत पहचान पर भी पड़ता है। सोशल मीडिया में व्यक्ति अपनी तस्वीर, विचार, पसंद, उपलब्धियों और अनुभवों के माध्यम से स्वयं की एक सार्वजनिक छवि निर्मित करता है। यह डिजिटल पहचान उसके वास्तविक व्यक्तित्व से जुड़ी भी हो सकती है और उससे अलग भी। इस संदर्भ में कविता का डिजिटल संसार व्यक्ति के "स्व" से संबंधित नए प्रश्न उत्पन्न करता है। व्यक्ति जो दिखाई देता है और जो भीतर से अनुभव करता है, उनके बीच अंतर संभव है। डिजिटल मंचों पर निरंतर उपस्थिति व्यक्ति को सामाजिक मान्यता प्राप्त करने का अवसर देती है, लेकिन "लाइक", "कमेंट" और "शेयर" जैसी प्रतिक्रियाएँ आत्म-मूल्यांकन को बाहरी प्रतिक्रियाओं से जोड़ सकती हैं। समकालीन डिजिटल कविता में इन शब्दों का प्रवेश इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि वे आधुनिक व्यक्ति के सामाजिक और भावनात्मक जीवन की नई संरचना का प्रतिनिधित्व करते हैं। "डिजिटल युग का मौन" में "लाइक्स और फॉरवर्ड्स" को मानसिक जीवन के ऊपर जमा होने वाली परतों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह बिंब डिजिटल लोकप्रियता और आंतरिक शांति के बीच तनाव को व्यक्त करता है। अधिक प्रतिक्रिया प्राप्त करना आवश्यक रूप से अधिक आत्मीयता प्राप्त करना नहीं है। इस प्रकार कविता डिजिटल सार्वजनिकता के भीतर छिपी निजी संवेदनात्मक स्थिति की ओर संकेत करती है। डिजिटल मंच पर व्यक्ति जितना अधिक दिखाई देता है, उसके भीतर का अनुभव उतना ही अधिक जटिल हो सकता है। इस विरोधाभास को आधुनिक मानवीय संवेदना की महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में पढ़ा जा सकता है।

डिजिटल जीवन में सामाजिक दूरी का प्रश्न भी इसी संदर्भ में महत्वपूर्ण हो जाता है। डिजिटल संचार भौतिक दूरी को कम करता है, लेकिन वह भावनात्मक दूरी को स्वतः समाप्त नहीं करता। उदय प्रकाश की कविता में फोन के माध्यम से पुकारे जाने वाला व्यक्ति और उसके बीच उपस्थित मौन इस दूरी का गहरा प्रतीक बन जाता है (Prakash, 2019)। दूसरी ओर, "डिजिटल युग का मौन" में लगातार सक्रिय स्क्रीन, संदेश और नोटिफिकेशन के बीच मनुष्य के भीतर शांति की तलाश दिखाई देती है। दोनों काव्य-पाठ अलग-अलग काव्य-स्थितियों के माध्यम से यह प्रश्न उठाते हैं कि तकनीकी संपर्क की अधिकता क्या वास्तव में मनुष्य को अधिक आत्मीय बना रही है।

इस संदर्भ में संवाद और आत्मीयता का प्रश्न केवल संपर्क की उपलब्धता का प्रश्न नहीं है। आत्मीय संवाद के लिए समय,

ध्यान, संवेदनशीलता और दूसरे की उपस्थिति को ग्रहण करने की क्षमता आवश्यक होती है। डिजिटल संचार त्वरित प्रतिक्रिया को प्रोत्साहित करता है, जबकि साहित्य और कविता कई बार ठहराव, स्मृति और आत्मचिंतन की माँग करते हैं। पाण्डेय की कविता का "मौन" इसी ठहराव की खोज है। कविता में मौन को "एयरप्लेन मोड" से जोड़ा गया है और इसे ऐसी स्थिति के रूप में प्रस्तुत किया गया है जहाँ आत्मा कुछ समय के लिए "नेटवर्क से बाहर" हो सके। यहाँ तकनीकी शब्दावली आध्यात्मिक और मानवीय अर्थ ग्रहण करती है। "एयरप्लेन मोड" सामान्यतः डिजिटल संपर्क को अस्थायी रूप से रोकने का विकल्प है, लेकिन कविता में यह आत्म-संवाद की आवश्यकता का प्रतीक बन जाता है।

यहाँ से कविता का विमर्श डिजिटल जीवन से आत्म-अनुभव की ओर बढ़ता है। तकनीक से दूरी बनाना कविता में तकनीक-विरोध नहीं है; बल्कि यह उस मनुष्य की खोज है जो तकनीकी शोर के बीच स्वयं को सुनना चाहता है। पाण्डेय की कविता में "चैट-बॉक्स" के बंद होने और "भीतर की रोशनी" के झिलमिलाने का बिंब इसी आत्मिक वापसी की ओर संकेत करता है। इस दृष्टि से डिजिटल युग का मौन वास्तव में संचार की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि आंतरिक संवाद की पुनर्स्थापना है।

इन काव्य-पाठों के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट होता है कि डिजिटल जीवन ने मानवीय संवेदना को समाप्त नहीं किया है; बल्कि उसकी अभिव्यक्ति के संदर्भ और प्रतीक बदल दिए हैं। मोबाइल नंबर, स्क्रीन, नोटिफिकेशन, चैट-बॉक्स, नेटवर्क और डिजिटल स्मृति जैसे शब्द अब केवल तकनीकी शब्द नहीं रह जाते। कविता इन्हें प्रेम, स्मृति, विरह, अकेलेपन, आत्मचिंतन और संबंधों की जटिलता से जोड़ देती है। इस प्रकार तकनीकी वस्तुएँ साहित्य में मानवीय अनुभवों के प्रतीक में बदल सकती हैं।

समकालीन हिंदी कविता में डिजिटल जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि वह व्यक्ति और समाज के बीच संबंध को नए संदर्भ में देखने का अवसर देती है। सोशल मीडिया व्यक्ति को सार्वजनिक अभिव्यक्ति देता है, लेकिन उसी के साथ सार्वजनिक प्रतिक्रिया और लोकप्रियता का दबाव भी उत्पन्न कर सकता है। 2025 में प्रकाशित एक साक्षात्कार में कवि वीरू सोनकर ने सोशल मीडिया को हिंदी कविता के प्रकाशन और पहुँच के विस्तार से जोड़ा, साथ ही यह भी कहा कि इसके साथ संपादकीय छनाई के कमजोर पड़ने और वायरल होने की आकांक्षा जैसी समस्याएँ सामने आई हैं (Hindwi, 2025)।

समकालीन हिंदी कविता में डिजिटल भाषा और बदलती अभिव्यक्ति

डिजिटल युग ने मनुष्य के जीवन के साथ-साथ उसकी भाषा और अभिव्यक्ति के स्वरूप को भी प्रभावित किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, मोबाइल संचार और डिजिटल प्लेटफॉर्मों के विस्तार के कारण दैनिक भाषा में तकनीकी शब्दों और नए संचार-प्रतीकों का प्रयोग सामान्य हुआ है। 'स्क्रीन', 'नोटिफिकेशन', 'नेटवर्क', 'ऑनलाइन', 'ऑफलाइन', 'लाइक', 'फॉरवर्ड', 'चैट', 'स्टेटस' और 'प्रोफाइल' जैसे शब्द अब केवल तकनीकी शब्दावली का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों को व्यक्त करने वाले शब्द बन चुके हैं। साहित्य, विशेषकर समकालीन कविता, अपने समय की भाषा को ग्रहण करती है; इसलिए डिजिटल जीवन से उत्पन्न शब्दावली का कविता में प्रवेश उसके बदलते अनुभव-संसार का स्वाभाविक परिणाम है। डिजिटल साहित्य और भारतीय भाषाओं पर किए गए हालिया अध्ययनों में भी तकनीकी माध्यमों के कारण साहित्यिक भाषा, संप्रेषण और पाठकीय अनुभव में हो रहे परिवर्तनों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है (Zaidi & Pue, 2023; Shahid et al., 2026)।

समकालीन हिंदी कविता में तकनीकी शब्दावली का प्रयोग केवल आधुनिकता प्रदर्शित करने के लिए नहीं होता, बल्कि कई बार ये शब्द नए काव्यात्मक प्रतीक का रूप ग्रहण कर लेते हैं। उदाहरण के लिए, "नेटवर्क" केवल इंटरनेट कनेक्शन का संकेत नहीं रह जाता; वह व्यक्ति और समाज के बीच संबंध का रूपक बन सकता है। इसी प्रकार "ऑफलाइन" सामाजिक संपर्क से दूरी, "ब्लॉक" संबंध-विच्छेद, "पासवर्ड" निजी जीवन की गोपनीयता और "स्क्रीन" व्यक्ति तथा बाहरी संसार के बीच बनी मध्यस्थता का प्रतीक बन सकती है। इस प्रकार तकनीकी शब्द अपने मूल अर्थ से आगे बढ़कर सामाजिक और भावनात्मक अर्थ ग्रहण करते हैं। यही प्रक्रिया डिजिटल युग की कविता को केवल तकनीकी संदर्भ वाली कविता से अलग करती है।

उदय प्रकाश की कविता "मेरा मोबाइल नम्बर डिलीट कर दें प्लीज़" इस भाषिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है। कविता में "मोबाइल नम्बर" एक सामान्य तकनीकी शब्द होते हुए भी संबंध, स्मृति और दूरी का काव्यात्मक प्रतीक बन जाता है (Prakash, 2019)। यहाँ मोबाइल नंबर किसी व्यक्ति तक पहुँचने का साधन मात्र नहीं है; वह उस व्यक्ति की डिजिटल उपस्थिति और उससे जुड़े भावनात्मक इतिहास को भी अपने भीतर रखता है। नंबर को मिटाने की इच्छा इसलिए केवल फोन की memory से किसी entry को हटाने की इच्छा नहीं रह जाती, बल्कि संबंध की स्मृति से मुक्त होने की आकांक्षा में बदल जाती है। इस प्रकार तकनीकी शब्द कविता के भीतर भावात्मक अर्थ ग्रहण करता है।

इसी प्रकार सुशील कुमार पाण्डेय की "डिजिटल युग का मौन" में "नोटिफिकेशन", "स्क्रीन", "स्क्रॉल", "लाइक्स",

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: June 2026 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

"फॉरवर्ड्स", "टैब्स", "स्टेटस", "ट्वीट", "मीम" और "ऐप्स" जैसे शब्द सीधे डिजिटल जीवन की शब्दावली को कविता में उपस्थित करते हैं (Pandey, 2026)। इन शब्दों का महत्व केवल इस बात में नहीं है कि वे आधुनिक जीवन का वातावरण निर्मित करते हैं, बल्कि यह है कि वे मनुष्य की आंतरिक स्थिति को व्यक्त करने लगते हैं। "नोटिफिकेशन" बाहरी सूचना का प्रतीक होते हुए मानसिक अशांति का संकेत बनता है, जबकि "टैब्स" व्यक्ति के एक साथ सक्रिय अनेक विचारों और अनुभवों का रूपक बन जाता है। इस प्रकार डिजिटल शब्दावली कविता में तकनीकी यथार्थ से मनोवैज्ञानिक यथार्थ की ओर रूपांतरित होती है।

सोशल मीडिया की भाषा ने कविता के संक्षिप्त और त्वरित अभिव्यक्ति-रूप को भी प्रभावित किया है। सोशल मीडिया पोस्ट और संदेशों में सीमित शब्दों में अधिक अर्थ व्यक्त करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। डिजिटल मंचों पर कविता की प्रस्तुति भी कई बार इसी संक्षिप्तता, तात्कालिकता और दृश्यात्मकता को अपनाती है। हिंदी कविता के डिजिटल मंचों पर प्रसार से संबंधित हालिया अध्ययनों में सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्मों को कविता के नए पाठकीय समुदाय तथा नए प्रस्तुति-रूपों के निर्माण से जोड़ा गया है (Shiva, 2026)। इससे कविता की पारंपरिक लंबाई और संरचना के अतिरिक्त छोटे, तीक्ष्ण और तत्काल प्रभाव उत्पन्न करने वाले काव्य-रूपों के लिए भी स्थान निर्मित हुआ है।

डिजिटल भाषा का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी बहुभाषिकता और मिश्रित प्रकृति है। हिंदी डिजिटल संचार में अंग्रेजी और तकनीकी शब्दों का मिश्रण व्यापक रूप से दिखाई देता है। यह मिश्रण समकालीन हिंदी कविता में भी प्रवेश कर सकता है। "स्क्रीन", "नेटवर्क", "लाइक", "स्टेटस", "चैट" और "ऑनलाइन" जैसे शब्द हिंदी वाक्य-संरचना के भीतर सहजता से प्रयुक्त होने लगे हैं। इस प्रकार भाषा में होने वाला यह परिवर्तन केवल शब्दों का परिवर्तन नहीं है; यह उस सामाजिक परिवेश का प्रतिबिंब है जिसमें आधुनिक हिंदी भाषी व्यक्ति एक साथ स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक भाषिक संसारों से जुड़ा हुआ है। डिजिटल साहित्य पर भारतीय संदर्भ में किए गए अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यम भाषिक प्रयोग और साहित्यिक संप्रेषण की नई संभावनाएँ निर्मित कर रहे हैं (Zaidi & Pue, 2023)।

डिजिटल माध्यमों ने कविता की दृश्यात्मक अभिव्यक्ति को भी नया आयाम दिया है। मुद्रित कविता मुख्यतः शब्द और पृष्ठ की संरचना पर निर्भर करती है, जबकि डिजिटल कविता चित्र, रंग, फॉन्ट, वीडियो, ऑडियो और अन्य दृश्य-श्रव्य तत्वों के साथ प्रस्तुत की जा सकती है। इस प्रकार कविता का अर्थ केवल भाषिक सामग्री से नहीं, बल्कि उसके presentation format से भी निर्मित हो सकता है। डिजिटल कविता के अध्ययन में multimodality को इसी कारण महत्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि डिजिटल साहित्य में शब्द, दृश्य और ध्वनि परस्पर मिलकर अर्थ का निर्माण कर सकते हैं (Kovalik & Curwood, 2019)। हिंदी कविता के डिजिटल विस्तार के संदर्भ में यह परिवर्तन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे काव्य-अनुभव पढ़ने से आगे बढ़कर देखने और सुनने का अनुभव भी बन सकता है।

नए संचार माध्यमों ने कवि और पाठक के संबंध को भी प्रभावित किया है। सोशल मीडिया पर कविता प्रकाशित होने के बाद पाठक तत्काल टिप्पणी, प्रतिक्रिया और साझा करने के माध्यम से अपनी उपस्थिति दर्ज कर सकता है। इस प्रकार कविता का संप्रेषण एकतरफा न रहकर अधिक संवादात्मक हो सकता है। डिजिटल साहित्यिक संस्कृति पर अध्ययन यह संकेत देते हैं कि ऑनलाइन मंचों ने लेखक और पाठक के बीच अधिक प्रत्यक्ष संबंध तथा साहित्यिक समुदायों के निर्माण की संभावनाएँ विकसित की हैं (Shahid et al., 2026)। हालांकि, तात्कालिक प्रतिक्रिया का यह वातावरण कविता को लोकप्रियता और दृश्यता की प्रतिस्पर्धा से भी जोड़ सकता है। इसलिए डिजिटल मंचों की भाषा और अभिव्यक्ति का मूल्यांकन केवल तकनीकी नवीनता के आधार पर नहीं, बल्कि उसके साहित्यिक प्रभाव के संदर्भ में किया जाना आवश्यक है।

निष्कर्ष

डिजिटल युग ने मनुष्य के जीवन, सामाजिक संबंधों, संचार-पद्धति और अभिव्यक्ति के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। प्रस्तुत अध्ययन में इसी परिवर्तन को समकालीन हिंदी कविता के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डिजिटल तकनीक समकालीन हिंदी कविता में केवल एक नवीन विषय के रूप में उपस्थित नहीं है, बल्कि वह आधुनिक मनुष्य के अनुभव, संबंधों, स्मृति, पहचान और संवेदना को समझने का एक महत्वपूर्ण संदर्भ बन चुकी है। इंटरनेट, मोबाइल, सोशल मीडिया और आभासी संचार ने मनुष्य को नए प्रकार की सामाजिक निकटता प्रदान की है, लेकिन इसी के साथ अकेलेपन, भावनात्मक दूरी और आत्मीयता के संकट से जुड़े प्रश्न भी सामने आए हैं। डिजिटल माध्यमों के सामाजिक प्रभाव पर उपलब्ध अध्ययनों में भी यह स्पष्ट हुआ है कि डिजिटल संपर्क का प्रभाव उसके उपयोग की प्रकृति और उद्देश्य के अनुसार अलग-अलग हो सकता है (Pennington, 2021; Bonsaksen et al., 2023)। समकालीन कविता इन जटिलताओं को अपने संवेदनात्मक और प्रतीकात्मक संसार में ग्रहण करती दिखाई देती है।

चयनित काव्य-पाठों के विश्लेषण से यह प्रमुख रूप से सामने आया कि डिजिटल माध्यमों ने मानवीय संबंधों की

अभिव्यक्ति के लिए नए प्रतीक उपलब्ध कराए हैं। उदय प्रकाश की कविता "मेरा मोबाइल नम्बर डिलीट कर दें प्लीज़" में मोबाइल नंबर तकनीकी संपर्क से आगे बढ़कर स्मृति, संबंध और दूरी का प्रतीक बन जाता है (Prakash, 2019)। इसी प्रकार सुशील कुमार पाण्डेय की "डिजिटल युग का मौन" में स्क्रीन, नोटिफिकेशन, लाइक्स, फॉरवर्ड्स और टैब्स जैसे तकनीकी शब्द आधुनिक मनुष्य की मानसिक स्थिति, सूचना-अधिकता और आत्म-संवाद की आवश्यकता को व्यक्त करने वाले काव्यात्मक प्रतीकों में परिवर्तित होते हैं (Pandey, 2026)। इससे स्पष्ट होता है कि तकनीकी शब्दावली कविता में केवल आधुनिक जीवन का वर्णन करने के लिए नहीं आती, बल्कि वह मानवीय अनुभवों की व्याख्या का माध्यम भी बन सकती है।

अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि डिजिटल जुड़ाव और मानवीय आत्मीयता को समान नहीं माना जा सकता। डिजिटल माध्यम व्यक्ति को निरंतर संपर्क में रहने की सुविधा देते हैं, लेकिन संपर्क की मात्रा आवश्यक रूप से भावनात्मक निकटता की गहराई निर्धारित नहीं करती। यही विरोधाभास समकालीन कविता में अकेलेपन और सामाजिक दूरी के नए रूपों को जन्म देता है। डिजिटल संसार में व्यक्ति अनेक लोगों से जुड़ा हुआ दिखाई दे सकता है, फिर भी उसके भीतर संवाद, आत्मीयता और आत्म-अभिव्यक्ति की अपूर्णता बनी रह सकती है। इस अर्थ में समकालीन हिंदी कविता डिजिटल युग के उस मानवीय अनुभव को अभिव्यक्त करती है जिसमें संचार की अधिकता के बीच मौन और संपर्क की अधिकता के बीच अकेलापन एक महत्वपूर्ण संवेदनात्मक स्थिति बन जाता है। इस अध्ययन का साहित्यिक योगदान मुख्यतः इस बात में निहित है कि इसने डिजिटल जीवन को केवल सामाजिक या तकनीकी घटना के रूप में न देखकर समकालीन हिंदी काव्य-संवेदना के संदर्भ में समझने का प्रयास किया है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि डिजिटल संस्कृति ने कविता के प्रतीक-संसार और भाषिक संसाधनों का विस्तार किया है। 'मोबाइल', 'स्क्रीन', 'नेटवर्क', 'नोटिफिकेशन', 'चैट' और 'लाइक' जैसे शब्द तकनीकी अर्थों से आगे बढ़कर संबंध, स्मृति, दूरी, पहचान और मानसिक अनुभवों के प्रतीक बन सकते हैं। डिजिटल साहित्य पर उपलब्ध अध्ययनों में भी तकनीकी माध्यमों द्वारा साहित्य के सृजन, प्रसार और अध्ययन के नए रूपों के विकास की ओर संकेत किया गया है (Zaidi & Pue, 2023)। इस दृष्टि से समकालीन हिंदी कविता डिजिटल सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत के रूप में सामने आती है।

इस अध्ययन की समकालीन प्रासंगिकता भी महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में डिजिटल माध्यम दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं और सोशल मीडिया ने संचार तथा आत्म-अभिव्यक्ति की प्रक्रिया को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। ऐसे समय में साहित्य के माध्यम से यह समझना आवश्यक है कि तकनीकी परिवर्तन मनुष्य के भीतर किस प्रकार के अनुभव उत्पन्न कर रहे हैं। समकालीन हिंदी कविता इन अनुभवों को संवेदनात्मक भाषा में दर्ज करती है और तकनीकी जीवन के उन पक्षों को सामने लाती है जिन्हें केवल सामाजिक या सांख्यिकीय अध्ययन के माध्यम से पूरी तरह समझना कठिन हो सकता है। इस प्रकार साहित्य डिजिटल समाज के मानवीय पक्ष को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम प्रदान करता है। फिर भी प्रस्तुत अध्ययन की कुछ सीमाएँ हैं। अध्ययन का corpus सीमित संख्या में चयनित काव्य-पाठों पर आधारित है और इसका उद्देश्य समकालीन हिंदी कविता के संपूर्ण डिजिटल साहित्य का प्रतिनिधित्व करना नहीं है। डिजिटल मंचों पर उपलब्ध साहित्य की विशालता तथा निरंतर बढ़ती सामग्री के कारण व्यापक corpus का अध्ययन इस शोध की सीमा से बाहर रहा है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल कविता की विभिन्न भाषाई, क्षेत्रीय और पीढ़ीगत विविधताओं को एक ही अध्ययन में पूरी तरह समाहित करना संभव नहीं है। इसलिए प्रस्तुत निष्कर्षों को चयनित काव्य-पाठों के साहित्यिक विश्लेषण के संदर्भ में समझना अधिक उपयुक्त होगा।

भविष्य में इस विषय पर शोध को अधिक विस्तृत corpus और तुलनात्मक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाया जा सकता है। हिंदी की विभिन्न पीढ़ियों के कवियों की डिजिटल अभिव्यक्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं की डिजिटल कविता का तुलनात्मक विश्लेषण, सोशल मीडिया कविता और मुद्रित कविता के भाषिक अंतर का अध्ययन तथा डिजिटल कविता में स्त्री, युवा, ग्रामीण और शहरी अनुभवों की अभिव्यक्ति आगे के महत्वपूर्ण शोध-विषय हो सकते हैं। इसी प्रकार कृत्रिम बुद्धिमत्ता और जनरेटिव AI के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में हिंदी कविता के सृजन, लेखकीयता और साहित्यिक मौलिकता के प्रश्न भी भविष्य के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र प्रस्तुत करते हैं।

संदर्भ सूची

Bonsaksen, T., Ruffolo, M., Price, D., Leung, J., Thygesen, H., Lamph, G., Kabelenga, I., & Geirdal, A. Ø. (2023). Associations between social media use and loneliness in a cross-national population: Do motives for social media use matter? *Health Psychology and Behavioral Medicine, 11*(1), 2158089. https://doi.org/10.1080/21642850.2022.2158089

Kovalik, K., & Curwood, J. S. (2019). #Poetryisnotdead: Understanding Instagram poetry within a transliteracies framework. *Literacy, 53*(4), 185–195. https://doi.org/10.1111/lit.12186

Menon, N., Shanmugapriya, T., Joseph, J., & Sutton, D. (Eds.). (2023). *Indian electronic literature anthology: Volume I.* IIT KSHIP. https://doi.org/10.57004/book1

Pennington, N. (2021). Communication outside of the home through social media during COVID-19. *Computers in Human Behavior Reports, 4*, 100118. https://doi.org/10.1016/j.chbr.2021.100118

Shahid, M., Ahmad, S. A., Ahmad, B., & Khan, M. R. (2026). Digital humanities and electronic literature in India: Opportunities, challenges, and future directions. *New Review of Hypermedia and Multimedia, 32*(2–3), 199–224. https://doi.org/10.1080/13614568.2026.2643163

Shanmugapriya, T., & Menon, N. (2018). Locating new literary practices in Indian digital spaces. *MATLIT: Materialities of Literature, 6*(1), 159–174. https://doi.org/10.14195/2182-8830_6-1_11

Shanmugapriya, T., & Menon, N. (2019a). First and second waves of Indian electronic literature. *Journal of Comparative Literature and Aesthetics, 42*(4), 63–71.

Shanmugapriya, T., Menon, N., & Campbell, A. (2019b). An introduction to the functioning process of embedded paratext of digital literature: Technoeikon of digital poetry. *Digital Scholarship in the Humanities, 34*(3), 646–660. https://doi.org/10.1093/llc/fqy064

Zaidi, N., & Pue, A. S. (Eds.). (2023). *Literary cultures and digital humanities in India*. Routledge.

Prakash, U. (2019). *Ambar mein ababil*. Vani Prakashan.